

गुरु गोरखनाथ जी
राजकीय महाविद्यालय हिसार

हिंदी
विभागीय पत्रिका

“भावों की सच्ची अभिव्यक्ति और देश का स्वाभिमान है हिंदी ।”

राजपाल



सत्र : 2025-26

सितम्बर, 2026

हिंदी विभागीय पत्रिका

हिंदी ... साहित्य... प्रौद्योगिकी...

हिंदी समृद्ध परम्परा की अगली कड़ी

वर्ष : 02, अंक 21, सितम्बर 2026
आश्विन मास| विक्रम संवत-2082

संस्थापक सम्पादक

डॉ राजपाल

सहायक सम्पादक

डॉ. राजेंद्र प्रसाद
राकेश बिडाणियाँ,
डॉ. देवेंद्र सिंह सांगा

छात्र सम्पादक

नरेश सिंह,
विनय कुमार ,
कोमल, मनीषा

सम्पादकीय कार्यालय
हिंदी विभाग, गुरु गोरखनाथ जी राजकीय महाविद्यालय हिसार

9466370922, 9255451522

gchisarhindi@gmail.com
dr.rajhisari@gmail.com

एक नज़र

प्राचार्य संदेश
संपादकीय
गोरखनाथ जी का जीवन दर्शन

हिंदी दिवस पर दोहे
स्मृति शेष
विविध

साहित्य प्रश्नोत्तरी
शब्द-सम्पदा
विलोम शब्द
प्रशासनिक शब्दावली
पुस्तक समीक्षा

हिन्दी साहित्य विषय के प्रतियोगियों के लिए भी उपयोगी

संदेश



यह मेरे लिए अत्यंत हर्ष का विषय है कि महाविद्यालय के हिंदी विभाग द्वारा साहित्यिक एवं रचनात्मक अभिव्यक्ति को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से यह पत्रिका आपके समक्ष प्रस्तुत की जा रही है। हिंदी हमारे लिए केवल भाषा नहीं, बल्कि हमारी संस्कृति, संवेदना, जीवन-मूल्यों और राष्ट्रीय चेतना की सशक्त अभिव्यक्ति है।

शिक्षा का उद्देश्य केवल ज्ञान अर्जित करना नहीं, बल्कि विद्यार्थियों में चिंतन, संवेदनशीलता, रचनात्मकता और सामाजिक उत्तरदायित्व का विकास करना भी है। साहित्य इन सभी गुणों के विकास का प्रभावी माध्यम है। कविता, कहानी, निबंध, संस्मरण और विचारपरक लेखन विद्यार्थियों को अपनी अनुभूतियों और विचारों को सृजनात्मक रूप में व्यक्त करने का अवसर प्रदान करते हैं।

आज के डिजिटल और तकनीकी युग में हिंदी के सामने नई संभावनाएँ भी हैं और नई चुनौतियाँ भी। हमें हिंदी को आधुनिक ज्ञान-विज्ञान, तकनीक और संचार के साथ जोड़ते हुए उसके व्यापक विकास के लिए निरंतर प्रयास करना होगा। विशेष रूप से युवा पीढ़ी में हिंदी के प्रति प्रेम, सम्मान और रचनात्मक अभिरुचि विकसित करना हमारा सामूहिक दायित्व है।

मुझे विश्वास है कि हिंदी विभाग की यह रचनात्मक पहल विद्यार्थियों की प्रतिभा को नया मंच प्रदान करेगी तथा महाविद्यालय में साहित्यिक, सांस्कृतिक और मानवीय चेतना को और अधिक सुदृढ़ करेगी।

मैं हिंदी विभाग के प्राध्यापकों एवं सभी रचनाकार विद्यार्थियों को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ देता हूँ।

सृजन की यह यात्रा निरंतर आगे बढ़ती रहे और हिंदी की साहित्यिक चेतना नई ऊँचाइयों को स्पर्श करे—इसी मंगलकामना के साथ।

शुभकामनाओं सहित।

आप सभी के उज्ज्वल भविष्य की मंगलकामना के साथ।

प्राचार्य
प्रो. अंजू चौधरी



संपादकीय

साहित्य : संवेदना, चेतना और परिवर्तन का माध्यम

हमें यह साझा करते हुए हर्ष हो रहा है कि हिंदी विभाग द्वारा साहित्यिक चेतना, रचनात्मक अभिव्यक्ति और विद्यार्थियों की सृजनात्मक प्रतिभा को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से यह पत्रिका आपके समक्ष प्रस्तुत की जा रही है। यह प्रयास केवल रचनाओं का संकलन नहीं, बल्कि भाषा, साहित्य और जीवन के बीच जीवंत संवाद स्थापित करने का एक विनम्र प्रयास है। हिंदी साहित्य की परंपरा अत्यंत समृद्ध और व्यापक रही है। साहित्य ने प्रत्येक युग में समाज को दिशा देने, रूढ़ियों पर प्रश्न उठाने और मनुष्य के भीतर संवेदना जगाने का कार्य किया है। इसी साहित्यिक परंपरा को विद्यार्थियों से जोड़ने के उद्देश्य से हिंदी विभाग द्वारा समय-समय पर विभिन्न साहित्यिक गोष्ठियों, जयंती समारोहों, व्याख्यानों एवं रचनात्मक गतिविधियों का आयोजन किया जाता रहा है।

इस क्रम में भारतेन्दु हरिश्चंद्र, शेखर जोशी और कुँवर नारायण जैसे महत्त्वपूर्ण साहित्यकारों के साहित्य और व्यक्तित्व को केंद्र में रखकर आयोजित कार्यक्रम विशेष रूप से उल्लेखनीय रहे। भारतेन्दु हरिश्चंद्र ने हिंदी नवजागरण को नई दिशा देते हुए भाषा, साहित्य और राष्ट्रीय चेतना को सशक्त आधार प्रदान किया। शेखर जोशी ने श्रमशील मनुष्य, श्रमिक जीवन और सामाजिक यथार्थ को अपनी कहानियों में संवेदनशील अभिव्यक्ति दी, जबकि कुँवर नारायण ने अपनी कविता और चिंतन के माध्यम से आधुनिक मनुष्य, इतिहास, नैतिकता और मानवीय मूल्यों को गहराई से देखा। इन रचनाकारों का स्मरण वास्तव में उनके साहित्य से संवाद स्थापित करना है। आज का समय तकनीकी परिवर्तन और डिजिटल संचार का समय है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता और नए संचार माध्यमों ने ज्ञान की दुनिया को व्यापक बनाया है, लेकिन ऐसे समय में भी पुस्तक, साहित्य और मानवीय संवेदना का महत्त्व कम नहीं हुआ है। बल्कि बदलते समय में साहित्य की आवश्यकता और अधिक बढ़ गई है, क्योंकि साहित्य मनुष्य को सूचना से आगे ले जाकर विवेक, संवेदना और मूल्य-बोध प्रदान करता है।

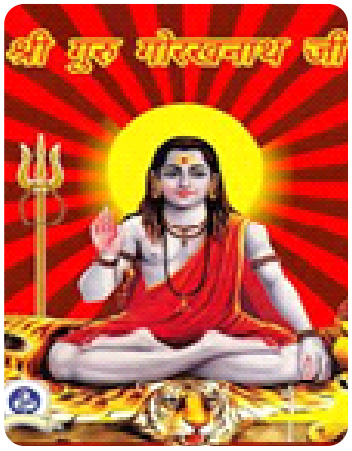
यह पत्रिका विद्यार्थियों को अपनी कविताएँ, कहानियाँ, लेख, संस्मरण और विचार प्रस्तुत करने का अवसर देती है। हमें विश्वास है कि इन रचनाओं में विद्यार्थियों के मन की जिज्ञासा, कल्पना, संवेदना और अपने समय को समझने की आकांक्षा प्रतिबिंबित होगी। विद्यार्थियों की रचनात्मकता को मंच देना ही इस पत्रिका का सबसे महत्त्वपूर्ण उद्देश्य है।

हम हिंदी को केवल एक विषय के रूप में नहीं, बल्कि ज्ञान, संस्कृति, संवाद और सृजन की भाषा के रूप में देखने का प्रयास कर रहे हैं। हमारा लक्ष्य है कि विद्यार्थी हिंदी पढ़ें ही नहीं, बल्कि हिंदी में सोचें, लिखें, प्रश्न करें और सृजन करें।

अंततः, इस पत्रिका के प्रकाशन में सहयोग देने वाले सभी प्राध्यापकों, विद्यार्थियों और रचनाकारों के प्रति हिंदी विभाग आभार व्यक्त करता है। आशा है कि यह साहित्यिक यात्रा निरंतर आगे बढ़ेगी और हमारे महाविद्यालय में पठन-संस्कृति, साहित्यिक चेतना और रचनात्मक अभिव्यक्ति को नई ऊर्जा प्रदान करेगी।

आइए, साहित्य से जुड़ें, संवेदना को बचाएँ और सृजन के माध्यम से अपने समय को बेहतर बनाने का प्रयास करें।

संपादक



गोरखनाथ जी का जीवन दर्शन

गतांक से आगे....

५-२३.८ जनीजनार्दन एकनाथ के समकालीन कवि थे। कंथडीनाथ की परम्परा में इनका प्रमुख स्थान है। इनके अनुसार -
आदिनाथं गुरू वन्दे कंथडी ज्ञान सागरम् । घुंडिराज प्रणम्यादो निगुणं च जनार्दनम् ।।
सुन हो रावल सीधा मारग । नाथ पंथ यही जोगं बाबा ।।
५-२३.६ मानपुरी ने औरंगाबाद के निकट दौलताबाद में देवगिरी की तलहटी में अपना मठ स्थापित किया था, जहाँ इन्होंने सन् १७३० ई० में समाधि ग्रहण की थी। इनकी हिन्दी की रचनाओं में ज्ञानेश्वर से लेकर सत्रहवीं शताब्दी के गोपालनाथ तक अनेक नाथ सम्प्रदाय के कवियों का सादर उल्लेख मिलता है।
इनके अब तक तीन सौ पचास पद उपलब्ध हो गए हैं जिनके आधार पर कह सकते हैं कि इनके काव्य में संक्षिप्त-रचना-सौन्दर्य, भावात्मकता, सहज सुबोधता, आध्यात्मिक एवं यौगिक अनुभवों का सरल स्पष्टीकरण मिलता है।

५-२३.१० उपर्युक्त प्रमुख महाराष्ट्र के नाथपंथीय हिन्दी कवियों के भतिरिक्त सेनानाई, मानसिंग, दयालनाथ, नरहरिनाथ, महीपतिनाथ की रचनाएँ भी नाथ-सम्प्रदाय के साहित्य के अन्तर्गत आती हैं। समर्थ रामदास, केशवस्वामी, तुकाराम, अमृतराय आदि संत कवियों की वाणी भी नाथ-सम्प्रदाय के साहित्य से प्रभावित है ।

५-२४ उपयुक्त विवेचन के आधार पर निष्कर्ष रूप में कह सकते हैं कि नाथ-सम्प्रदाय का साहित्य योगी-सम्प्रदाय के चिन्तन के उत्कर्ष को प्रस्तुत करता है। यह एक व्यक्ति का साहित्य न होकर अनेक व्यक्तियों के परिश्रम का फल है, जिस पर गोरखनाथ के महिमामय व्यक्तित्व का बहुत अधिक प्रभाव है। अनेक पंथियों से टक्कर लेते हुए, खण्डन सामंजस्य तथा मेल-मिलाप करते हुए, इन्होंने अपने साहित्य द्वारा नाथ-सम्प्रदाय को देश के कोने-कोने तक फैला दिया
था। जितने भी मठ, मन्दिर, घखाड़े भादि इस सम्प्रदाय अथवा गोरखनाथ से सम्बधिन्त हैं उन सब का श्रेय इन्हीं नाथ-योगियों की वाणी के प्रसार को है।

इन नाथ योगियों का साहित्य साहित्यशास्त्र की चिन्ता किए बिना निर्बाध गति से, जिज्ञासु शिष्यों तथा भक्तों की ज्ञान पिपासा की शान्ति के लिए, स्वानु- भूत तथ्यों पर भ्राधारित वाणी के रूप में विसरित हुआ है।
इनके साहित्य में तात्कालिक भारत की संस्कृति और इतिहास के स्पष्ट दर्शन होते हैं। इस युग में इस्लाम, ब्राह्मणवाद और जोगी तीन धारायें प्रवाहित हो रही थीं, जिनमें परस्पर बहुत विरोध था । नाथ सम्प्रदाय ने अपने साहित्य द्वारा निम्नजातियों को शक्ति दी, ब्राह्मणों को चुनौती दी, तथा भारतीयता का गर्व और अभिमान लेकर उसकी समस्त अच्छाइयों को नाथ-सम्प्रदाय के रूप में स्थापित किया। यहाँ तक कि इस्लाम पर भी इन्होंने बहुत प्रभाव डाला। परिणाम- स्वरूप परवर्ती काल का सूफी काव्य इनसे बहुत अधिक प्रभावित हुआ ।

नाथों की वाणी की भाषा में बहुत परिवर्तन हुआ है। जिस रूप में वे बाज उपलब्ध हैं, उनकी भाषा प्राचीन नहीं कही जा सकती, परन्तु उन में कुछ प्राचीनता का स्वर अब भी शेष है। गोरखनाथ की बानियों की भाषा पर मुख्य रूप से पूर्वी अर्थात् भोजपुरी भाषा का प्रभाव लक्षित होता है। इस में कहीं-कहीं मराठी, गुजराती, भोजपुरी, मगही, उड़िया, नेपाली, बंगला आदि भाषा के शब्द भी मिलते हैं, जिसका मुख्य कारण यही हो सकता है कि ये जहाँ-जहाँ प्रचार के लिए गये वहां-वहां का प्रभाव इन्होंने ग्रहण किया और वहां की भाषा का प्रयोग भी अपने उपदेशों के लिए क्रिया । इसी कारण इन की भाषा में देश की सभी भाषाओं का प्रयोग मिलता है। अतः इन की भाषा को सधुक्कड़ी भाषा की संज्ञा दी गयी, जिसका परवर्ती काल के निर्गुण संतों ने भी प्रयोग किया ।

गुरु गोरखनाथ के पद

गुर कीजै गहिला निगुरा न रहिला, गुर बिन ग्यांन न पायला रे भाइला ॥ टेक ॥ दूधै धोया कोइला उजला न होइला, कागा कंठै पहुप माल हंसला न भइला। आभा जैसी रोटली कागा ले जाइला, पूछौ म्हारा गुरु नैं कहां बैसि खाइला । उतर दिसि आविला पछिम दिस जाइला, पूछौ म्हारा सतगुरु नै तिहां बैसि खाइला ।चींटी केरा नेत्र मैं गज्येंद्र समाइला।, गावड़ी के मुख में बाघला बिवाइला। बारे बरसें बंझ ब्याई हाथ पाँव टूटा, बदंत गोरखनाथ मछिंद्र ना पूता ॥

हे मायाग्रस्त (गहिला) साधक ! गुरु तो बनाना चाहिए। गुरुहीन रहना ठीक नहीं। हे भाई ! गुरु के बिना तत्त्वज्ञान नहीं मिलता। दूध से धोने पर भी कोयला उज्ज्वल (सफेद) नहीं होता, अर्थात् तीर्थ स्नान (दूधै) करने से मन (कोयला) शुद्ध नहीं होता। कौए के कण्ठ में फूलों की माला डालने से वह हंस नहीं बन जाता, अर्थात् मन (कागा) को पुराण (पहुप) का उपदेश पढाने से वह तत्त्वज्ञानी (हंस) नहीं बनता। काल (कागा) शरीर (आभा) को रोटी की तरह ले भागता है, मैंने गुरु जी से पूछा कि वह कहाँ इसे खाता है ? हमारे गुरु जी ने समझाया कि वह उत्तर दिशा से आता है और पश्चिम दिशा में जाता है, वहाँ बैठकर खाता है, अर्थात् शब्द/अनहद (उत्तर) में आता है और पवन (परमेश्वर) में जाता है, वहाँ शरीर की मुक्ति होती है। इस प्रकार चींटी के नेत्र में हाथी समा जाता है, अर्थात् चींटी (मनसा/सात्विक बुद्धि) में गजेन्द्र (स्थूल मन) लीन हो जाता है। फलस्वरूप गाय के मुख में बाघ उत्पन्न होता है, अर्थात् आत्मा को (गावड़ी) आत्म स्वरूप (बाघ) का ज्ञान होता है। बारह वर्ष में बाँझ ने जन्म दिया, अर्थात् बारह वर्ष में आत्मा को ज्ञान हुआ और माया के हाथ-पाँव टूट गए (माया उपरत हो गई) । मछन्दर का पुत्र गोरख यह ज्ञान बता रहा है।

हिंदी दिवस पर दोहे

हिंदी दिवस पर दोहे

- हिंदी भारत भाल की, बिंदी है अभिराम
हिंदी से होती सुबह, हिंदीमय है शाम।

- हिंदी बस भाषा नहीं, हिंदी है संस्कार।
हिंदी में ही दिख रहा, अनुपम सद्व्यवहार।
हिन्दी भाषा है बनी, हम सबका सम्मान।

- हिन्दी सर का ताज है, हिन्दी ही अभिमान।
जात-पात के बंधन को तोड़े, हिंदी सारे देश को जोड़े।
अपनापन है बोध कराती, ऐसी अद्भुत रीत हमारी।
निज भाषा उन्नति अहै, सब भाषा को मूल।
बिन निज भाषा ज्ञान के, मिटत न शूल को शूल।
भावों की सच्ची अभिव्यक्ति, हिंदी की पहचान।
राष्ट्र-गौरव, संस्कृति-स्वाभिमान, हिंदी हिंदुस्तान॥

रक और सुंदर पंक्तियाँ

- "हिंदी केवल मातृ भाषा ही नहीं, अपनेपन का एहसास है। हिंदी हिन्दुस्तान की शान है, हर हिन्दुस्तानी की पहचान है।"
- "भारत मां के भाल पर सजी स्वर्णिम बिंदी हूं, मैं भारत की बेटी आपकी अपनी हिंदी हूं।"
- "हम सब का अभिमान हैं हिंदी, भारत देश की शान हैं हिंदी।"
- "वक्ताओं की ताकत है हिंदी, लेखकों का अभिमान है हिंदी।"
- "हिंदी दुनिया की एकमात्र ऐसी भाषा है, जो 'अ' अनपढ़ से शुरू होकर 'ज्ञ' ज्ञानी पर समाप्त होती है।"

छोटे और असरदार नारे (Slogans)

- "अपनी भाषा, अपना देश; हिंदी ही है भारत का भेष।"
- "हिंदी रहे, हिंदुस्तान रहे — हिंदी का सदा सम्मान रहे।"
- "मातृभाषा का मान बढ़ाओ, हिंदी का झंडा लहराओ।"



ENGISH PHRASES WORDS



1. **Keep your cool-** Keep your cool during the interview.
2. **Speak your mind-** Don't be afraid to speak your mind.
3. **Make ends meet-** It is hard to make ends meet these days.
4. **Learn the ropes-** It took me a week to learn the ropes.
5. **Go with the flow-** Sometimes, just go with the flow.
6. **Get the hang of it-** You'll soon get the hang of it.
7. **In a nutshell-** In a nutshell, the plan is simple.
8. **On the same page-** We are finally on the same page.
9. **A fresh start-** Tomorrow is a chance for a fresh start.
10. **Step by step-** We will complete the work step by step.
11. **For the time being-** Stay here for the time being.
12. **At the end of the day-** At the end of the day, family matters most.
13. **In the nick of time-** He arrived in the nick of time.
14. **Out of the blue-** She called me out of the blue.
15. **By all means-** By all means, use my notes.
16. **For good-** He left the city for good.
17. **At first glance-** At first glance, the question looked easy.
18. **In no time-** We finished the work in no time.
19. **Out of order-** The lift is out of order.
20. **Worth a try-** This idea is worth a try.

स्मृति शेष : नरेन्द्र मोहन जी का चिंतन : भारतबोध, राष्ट्रचेतना और सनातन जीवन-दृष्टि

नरेन्द्र मोहन जी का स्मरण केवल एक वरिष्ठ पत्रकार और संपादक के रूप में करना उनके व्यक्तित्व और कृतित्व को सीमित कर देना होगा। वे पत्रकारिता को केवल समाचार संप्रेषण का माध्यम नहीं मानते थे, बल्कि उसे समाज और राष्ट्र के प्रति उत्तरदायी वैचारिक कर्म के रूप में देखते थे। दैनिक जागरण के संपादक और प्रधान संपादक के रूप में उन्होंने दीर्घ अवधि तक हिंदी पत्रकारिता को दिशा दी तथा अनेक पत्रकारों और संपादकों को तैयार किया। उनके व्यक्तित्व का एक महत्त्वपूर्ण पक्ष यह था कि पत्रकारिता, साहित्य, संस्कृति और राष्ट्रीय जीवन के प्रश्न उनके चिंतन में अलग-अलग खानों में विभाजित नहीं थे। उनके लिए भारत और भारतीयता जीवन और विचार के केंद्रीय संदर्भ थे। उनके लोकप्रिय स्तंभ 'विचार प्रवाह' को इस दृष्टि से विशेष रूप से देखा जा सकता है। उपलब्ध सामग्री में स्पष्ट रूप से उल्लेख है कि इस स्तंभ के केंद्र में भारत और भारतीयता रहती थी। उनकी पुस्तकों में भारतीय संस्कृति, हिंदुत्व, धर्म और सांप्रदायिकता, समकालीन राजनीति एवं भ्रष्टाचार तथा प्रतिरक्षा और सामरिक नीति जैसे विषयों का समावेश उनके व्यापक वैचारिक सरोकारों को सामने लाता है। नरेन्द्र मोहन जी के चिंतन की पहली प्रमुख विशेषता भारतबोध है। उनके लिए भारत केवल राज्य या राजनीतिक सीमा का नाम नहीं था, बल्कि एक दीर्घ सांस्कृतिक परंपरा, जीवन-मूल्यों और सामूहिक चेतना से निर्मित सभ्यतागत अनुभव था। यही कारण है कि भारतीय संस्कृति, धर्म, परंपरा और भारतीयता उनके लेखन में बार-बार उपस्थित होती है। भारत को समझने के लिए उसकी ऐतिहासिक स्मृति, सांस्कृतिक निरंतरता और समाज की विविध परंपराओं को समझना आवश्यक है—उनके वैचारिक सरोकार इसी व्यापक धरातल पर दिखाई देते हैं। नरेन्द्र मोहन जी के भारतबोध को केवल अतीत की ओर लौटने की आकांक्षा के रूप में देखना भी उचित नहीं होगा। उनके लेखन का एक महत्त्वपूर्ण पक्ष समकालीन भारत से संवाद है। वे पत्रकार थे और पत्रकारिता का मूल स्वभाव ही वर्तमान से मुठभेड़ करना है। इसलिए राजनीति, भ्रष्टाचार, राष्ट्रीय सुरक्षा, सामाजिक प्रश्न और बदलते सार्वजनिक जीवन पर उनका विचार भारतीय संदर्भों में वर्तमान को समझने का प्रयास था। उनके लेखन की यही विशेषता उन्हें केवल सांस्कृतिक चिंतक न बनाकर समकालीन सार्वजनिक विमर्श का सक्रिय हस्ताक्षर बनाती है।

राष्ट्रचेतना : पत्रकारिता से जनचेतना तक

नरेन्द्र मोहन जी के व्यक्तित्व को समझने के लिए उनकी पत्रकारिता को केंद्र में रखना आवश्यक है। उन्होंने लगभग 37 वर्षों तक संपादक और प्रधान संपादक के रूप में कार्य किया। उपलब्ध विवरणों के अनुसार आपातकाल के दौर में उनकी पत्रकारिता ने सत्ता और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता से जुड़े प्रश्नों को भी सामने रखा और उन्हें गिरफ्तारी का सामना करना पड़ा। यह प्रसंग उनकी पत्रकारिता के उस पक्ष की ओर संकेत करता है जिसमें संपादकीय कर्म केवल व्यावसायिक जिम्मेदारी नहीं रह जाता, बल्कि लोकतांत्रिक मूल्यों और सार्वजनिक संवाद से जुड़ जाता है। समाचारपत्र समाज के सामने केवल घटनाएँ नहीं रखता; वह घटनाओं के अर्थ और उनके सामाजिक प्रभाव पर भी विचार करता है। नरेन्द्र मोहन जी की पत्रकारिता इसी अर्थ में राष्ट्रचेतना के निर्माण से जुड़ती है। उनके लिए राष्ट्रचेतना का प्रश्न केवल राजनीतिक सत्ता के संदर्भ में नहीं था। राष्ट्र की चेतना उसके नागरिकों, उसकी संस्कृति, उसकी भाषाओं, उसकी सामाजिक स्मृति और उसके लोकतांत्रिक जीवन से निर्मित होती है। इसलिए भारतीयता और राष्ट्रचेतना को साथ रखकर देखने की उनकी प्रवृत्ति उनके वैचारिक व्यक्तित्व का महत्त्वपूर्ण पक्ष बनती है।

भारतीय संस्कृति और सनातन जीवन-दृष्टि

नरेन्द्र मोहन जी की पुस्तकों और लेखन में भारतीय संस्कृति तथा हिंदुत्व से जुड़े प्रश्नों की उपस्थिति उनके सांस्कृतिक चिंतन की ओर संकेत करती है। (हिंदी हैं हम) इन विषयों को आज के संदर्भ में पढ़ते हुए यह आवश्यक है कि उन्हें केवल राजनीतिक शब्दावली के भीतर सीमित न किया जाए। भारतीय जीवन-दृष्टि के संदर्भ में धर्म, संस्कृति, परंपरा, नैतिकता और सामाजिक उत्तरदायित्व जैसे प्रश्न व्यापक सांस्कृतिक विमर्श का हिस्सा रहे हैं।

सनातन जीवन-दृष्टि की चर्चा करते हुए भारतीय परंपरा में निरंतरता और परिवर्तन दोनों को ध्यान में रखना आवश्यक है। भारतीय संस्कृति का इतिहास अनेक विचारधाराओं, संप्रदायों, भाषाओं और लोकपरंपराओं के संवाद से बना है। नरेन्द्र मोहन जी के चिंतन को वर्तमान में प्रासंगिक बनाने का एक रास्ता यह भी है कि उनके द्वारा उठाए गए सांस्कृतिक प्रश्नों को नई पीढ़ी के अनुभवों और वर्तमान सामाजिक परिस्थितियों से जोड़कर देखा जाए। आज जब वैश्वीकरण और डिजिटल संस्कृति ने जीवन के स्वरूप को तेजी से बदला है, तब भारतीयता का प्रश्न नए रूप में सामने आया है। युवा पीढ़ी एक साथ स्थानीय और वैश्विक दोनों संसारों में जी रही है। ऐसे समय में अपनी सांस्कृतिक पहचान को समझना और उसके साथ आलोचनात्मक तथा आत्मीय संवाद करना आवश्यक है। नरेन्द्र मोहन जी का भारत और भारतीयता पर केंद्रित चिंतन इस संवाद के लिए आधार उपलब्ध कराता है।

पत्रकारिता में विचार की भूमिका

नरेन्द्र मोहन जी की सबसे बड़ी विशेषताओं में एक यह थी कि उन्होंने पत्रकारिता को विचार से जोड़ा। 'विचार प्रवाह' इसका प्रत्यक्ष उदाहरण है। किसी समाचारपत्र में नियमित वैचारिक स्तंभ का महत्त्व इस बात में होता है कि वह तत्कालीन घटनाओं को व्यापक सामाजिक और राष्ट्रीय संदर्भ में देखने का अवसर देता है।

आज पत्रकारिता का स्वरूप बहुत बदल चुका है। डिजिटल मीडिया, सामाजिक संचार मंच, त्वरित समाचार और दृश्य-श्रव्य सामग्री ने सूचना के प्रसार को अत्यंत तीव्र कर दिया है। ऐसे समय में नरेन्द्र मोहन जी की पत्रकारिता को याद करना इसलिए महत्त्वपूर्ण है कि वह हमें सूचना और विचार के अंतर को समझने का अवसर देती है। समाचार हमें घटना से परिचित कराता है, जबकि विचार उस घटना के अर्थ और उसके प्रभाव पर प्रश्न उठाता है। यही साहित्य और पत्रकारिता के बीच एक महत्त्वपूर्ण सेतु भी है। साहित्य मनुष्य के भीतर संवेदना जगाता है और पत्रकारिता समाज के सामने वर्तमान का यथार्थ रखती है। जब दोनों में विचार और सामाजिक उत्तरदायित्व का समावेश होता है, तब जनजागरण की प्रक्रिया अधिक प्रभावी होती है।

नरेन्द्र मोहन जी और जनजागरण

जनजागरण का अर्थ किसी विचार को समाज पर आरोपित करना नहीं, बल्कि समाज को अपने समय के प्रश्नों के प्रति सजग बनाना है। नरेन्द्र मोहन जी के लेखन और पत्रकारिता को इस संदर्भ में पढ़ा जा सकता है। उन्होंने जिन विषयों को उठाया, उनमें संस्कृति से लेकर राजनीति, भ्रष्टाचार से लेकर राष्ट्रीय सुरक्षा और धर्म से लेकर भारतीयता तक अनेक प्रश्न शामिल था । इस व्यापकता के कारण उनका चिंतन एक ही क्षेत्र तक सीमित नहीं रहता। वे पत्रकार थे, इसलिए उनका संबंध तत्कालीन घटनाओं से था; वे लेखक थे, इसलिए उनके सामने भाषा और विचार की चुनौती थी; और वे सार्वजनिक जीवन से भी जुड़े रहे, इसलिए राष्ट्र और समाज से संबंधित प्रश्न उनके अनुभव का हिस्सा बने। 1996 से 2002 तक वे राज्यसभा के सदस्य रहे और विभिन्न संसदीय समितियों से भी जुड़े रहे। इस प्रकार उनके जीवन में पत्रकारिता, लेखन और सार्वजनिक जीवन के तीनों आयाम दिखाई देते हैं। इन्हें अलग-अलग देखने के बजाय एक समग्र व्यक्तित्व के रूप में देखना उनके कृतित्व को समझने की अधिक उपयुक्त दृष्टि हो सकती है।

निष्कर्ष

नरेन्द्र मोहन जी का व्यक्तित्व हिंदी पत्रकारिता, भारतीय सांस्कृतिक चिंतन और सार्वजनिक जीवन के अनेक आयामों को अपने भीतर समेटे हुए था। दैनिक जागरण में उनके दीर्घ संपादकीय जीवन, 'विचार प्रवाह' जैसे स्तंभ और भारतीय संस्कृति, हिंदुत्व, धर्म, राजनीति तथा राष्ट्रीय प्रश्नों पर उनके लेखन ने उनके वैचारिक व्यक्तित्व को विशिष्ट स्वर दिया। उनकी स्मृति में आयोजित यह विचार-गोष्ठी वस्तुतः उनके विचारों को वर्तमान पीढ़ी के सामने पुनः रखने का अवसर है। भारतबोध उनके चिंतन का एक केंद्रीय सूत्र रहा; राष्ट्रचेतना उसके सामाजिक विस्तार के रूप में देखी जा सकती है और भारतीय संस्कृति तथा सनातन जीवन-दृष्टि उनके व्यापक सांस्कृतिक सरोकारों को समझने के महत्त्वपूर्ण आधार हैं। नरेन्द्र मोहन जी को याद करना इसलिए भी आवश्यक है कि उन्होंने पत्रकारिता को केवल सूचना का माध्यम न मानकर विचार और सामाजिक उत्तरदायित्व से जोड़ने का प्रयास किया। उनकी स्मृति हमें यह प्रश्न पूछने के लिए प्रेरित करती है कि आज का साहित्य और पत्रकारिता अपने समय के प्रति कितने उत्तरदायी हैं और वे भारत की सांस्कृतिक स्मृति, राष्ट्रीय जीवन तथा नई पीढ़ी के बीच किस प्रकार सार्थक संवाद स्थापित कर सकते हैं।

इसी संवाद की निरंतरता नरेन्द्र मोहन जी के प्रति वास्तविक श्रद्धांजलि होगी।

संग्रह: हिंदी साहित्य और डिजिटल युग के विमर्श

भारतेंदु का साहित्य राष्ट्रीय चेतना और सामाजिक जागरण का सशक्त माध्यम : डॉ. राजेंद्र प्रसाद

संघ बने ज्ञापक



हिसार। गुरु गोरखनाथ जी सरकारीन महाविद्यालय, हिसार के हिंदी विभाग की छात्र ने हिंदी साहित्य परिषद के सहयोगन में भारतेंदु हरिश्चंद्र की हिंदी के उत्थान तथा उन्नत जीवन-कौन, सामाजिक एवं सांस्कृतिक चेतनाना पर विस्तार चर्चा सम्पन्न की गई।

चर्चा में हिंदी साहित्य विभाग के प्रभारी डॉ. अनिल कुमार ने भारतेंदु कॉलेज के सांस्कृतिक अवदान पर सकल डालते हुए कहा कि भारतेंदु को हिंदी साहित्य के अग्रदूतस हुत का उपयोग मात्र नहीं है। उनकी लिखे भाव हमें आजाद को नई दिशा देने के साथ समसामिय, नवल, निर्भय और साहस के सागरन में सामाजिक जागरूकता, सामाजिक सुधार आंदोलनिक गतिविधियों को नवजागरणी दौन ने अभिव्यक्त दिया। उन्होंने कहा कि भारतेंदु का साहित्य केवलुन मूल्य नहीं नागरिक नहीं के, बलिक नहीं दिशाएँ देते हैं। समाज कौलन और साहित्य लान भी विद्यार्थियों एवं साहित्य प्रेमियों के लिए प्रेरणास्पदी है।

कार्यक्रम में विद्यार्थियों ने भी भारतेंदु हरिश्चंद्र के दोहन, जातिवाद, भूमिवाद, और पुरुषेन परिस्थितियों का अपनी दिलाया सही। डी सुनीता ने विद्यार्थियों को असुरक्षित हिंदी साहित्य के इतुदूत दरवाजाहरणें तथा बाद साहित्यका मावसन दी रोमांच जताया। गाही सरकारीन जारतुई ने सब पहुंचेगे ल मालनूतों सभी दिया।

हिंदी विभागाध्यक्ष डॉ. कमलेश ने कहा कि भारतेंदु का साहित्य आज की मांग, पंरिस्थिति, राष्ट्रनीतिक आवसर और नवयुवि देशका के दोहनों से सामंजिस है। उनमें रिक्तारियों के हिंदी साहित्य के महान रचनाकारों के दौरान सर सुनिल का चंदौला थे जवरकन करने का आह्वान किया।

उन अवसान सर डॉ. जीत चारण, डॉ. सरीता, डॉ. नीलिन लोहित तिहे दिकान के कार्यनकर और दिवार्थी उपस्थिय रहे।

शिक्षक की बदलती भूमिका





एआइ और डिजिटल के दौर में रोजगार की नई भाषा बन रही हिंदी

हिंदी दिवस

मोबाइल, इंटरमेट व एआइ ने बढ़ाई हिंदी सामग्री की मांग, युवाओं के लिए खुल रहे रोजगार के नए-नए अवसर

जागरण संवाददाता • हिसार : हिंदी अब केवल साहित्य, संवाद और भावनाओं को भाषा तक सीमित नहीं रह गई है। मोबाइल, इंटरनेट, इंटरनेट भीडिया, आनलाइन शिक्षा, ई-कामर्स और एआइ के बढ़ते इस्तेगाल के साथ हिंपी जान और रोजगार की भाषा के रुप में भी अपनी अगह मजबूत कर डिजिटल कौशल रखने वाही युवाओं के लिए सामग्री लेखन, डिजिटल पत्रकारिता, अनुवाद, संपादन, विज्ञापन, जनसंपर्क और एआइ से खुई क्षेत्रों में रोजगार के नए अवसर सामने आ रहे है।



डा. राजपाल।

गुरु गोरखमाथ राजकीप महाविद्यालय के हिंदी भिमाग के डा. राजपाल में बताया कि हिंदी का सामाविक सम्मान केवल हिंदी दिवस वा हिंदी पखवाड़े सक रोमिन नहीं होना चाहिए। हिंदी को दैंबक जीवन, रिक्षा, तकनीक और सामकारी खोजने, आनलाइन खरीदारी करने और सामाजिक माध्यमी पर अपनी खात रखने के लिए हिंदी का बड़े स्तर पर इस्तेमाल कर रहे हैं। ऐसे में हिंदी सामग्री की मांग भी बढ़ रही है।

उन्होंने बताया कि पत्रकारिता, समाचार लेखन, संपादन, अनुवाद, विज्ञापन लेखन, रेडिमो, टेल्लीजिन, डिजिटल पत्रकारिता, बताग, साममी लेखन, पटकथा लेखन और प्रकाशन जैसे क्षेत्रों में हिंदी जानने वाहो युवाओं के लिए अवसर है। इंटरनेट के बिस्तार के साथ समाचार चेवसाइटों, लोडिबो मंचों और सामाजिक माध्यमी के लिए हिंदी जरूरत नही है। एआई के क्षेर में भी हिंदी को भूगिका बढ़ रही है। भाषा संपादन, अनुवाद, उपवाचिक निर्माण, वाणी से पाठ, पाठ में वाणी, डिजिटल सामग्री निर्माण और भारतीय भाषाओं के लिए एआई आमारित प्रणालिवों के विकास में हिंदी का उपभोग बढ़ रहा है। ऐसे में हिंदी के साथ कंप्यूटर, डिजिटल मीडिया और एआइ का जान रखने वाही युवाओं के लिए रोजगार को संभावनाए और ज्यापक से सकती हैं।

उन्होंने कल हिसाल खनों दिखा, तक इसमर प्रयोग को भी कापतित तक, रिक्षा में रोजगार तक और पुरतक से मोबाइल तथा एआइ तक

हिंदी केवल भाष रोजचार



बदलते दौर में हिंदी: डिजिटल दुनिया से वैश्विक मंच तक



साहित्य में निहित है 'सनातन जीवन-दृष्टि' का ज्ञान



संकलन: [Current Date]

गुरु गोरखनाथ राजकीय महाविद्यालय, हिसार से सम्बंधित समाचार

साहित्य प्रश्नोत्तरी

1. मूर्धन्य नियम का प्रथम परिचय मिलता है? -पाणिनिकृत 'अष्टाध्यायी' में
2. आधुनिक युग में मूर्धन्य नियम का प्रतिपादन किसने किया? -प्रो० पॉट एवं प्रो० फोर्तुनातोव ने
3. मूर्धन्य नियम का सम्बंध किस भाषा की ध्वनियों से है? - संस्कृत
4. तालव्य नियम के प्रणेता है? विल्हेल्म थामसन, जोहन्स स्मिथ, कालित्स।
5. वर्नर (फेर्नर) नियम के अपवादों का समाधान है? - मिथ्या सादृश्य
6. ग्रिम ने अपना ध्वनि नियम कब प्रतिपादित किया? -१८२२ ई० में
7. ग्रिम के ध्वनि नियम को 'ग्रिम नियम' की संज्ञा किसने दी? -मैक्समूलर
8. ग्रिम नियम का सम्बंध है? - भारोपीय एवं जर्मनिक शाखा की ध्वनियों से।
9. ग्रिम के अनुसार प्रथम एवं द्वितीय ध्वनि-परिवर्तन कब हुआ? - क्रमशः

(१) प्रागैतिहासिक काल में (६वीं और तीसरी शताब्दी इ०पू० के मध्य)

(२) सातवीं शताब्दी ई० के लगभग

10. ग्रिम के द्वितीय ध्वनि परिवर्तन नियम का सम्बन्ध है? - निम्न जर्मन और उच्च जर्मन से
11. ग्रिम नियम के अपवादों का समाधान किसने प्रस्तुत किया? - हेमार्न ग्रासमान
12. मानस्वर की कल्पना किसने की? - १९५३ ई० में डेनियल जोंस ने
13. मानस्वर कितने हैं? -८
14. गौण मानस्वरों की संख्या है? -७
15. उच्चारण की दृष्टि से भाषा की लघुतम इकाई है? - ध्वनि
16. सार्थक ध्वनियों के समूह को कहते हैं? - शब्द
17. जब शब्द विभक्तियों के योग से वाक्य में प्रयुक्त होता है, तब उसे कहते हैं? - पद या रूप
18. कोपेन हेगन सम्प्रदाय के प्रमुख भाषाशास्त्री हैं? - रामस रास्क, जेस्पर्सन
19. रूसी सम्प्रदाय के प्रमुख भाषा वैज्ञानिक हैं? - बादविन द कुर्तने, कुजेफस्की, शेरवा, फुर्तनातफ।
20. जेनेवा सम्प्रदाय के प्रमुख भाषा वैज्ञानिक हैं? - सोसूर, चार्ल्स बेली, अल्बर्ट

शब्द-युग्म
(समान-सा उच्चारण किंतु भिन्न अर्थवाले शब्द)

प्रत्येक भाषा में कुछ ऐसे शब्द भी होते हैं जो उच्चारण एवं लेखन में काफी समानता लिए हुए होते हैं किंतु थोड़ी-सी भिन्नता से भी उनके अर्थ नितांत अलग-अलग होते हैं। इस प्रकार के शब्दों के उच्चारण एवं लेखन की समानता-असमानता और अर्थ-भिन्नता के प्रति विशेष जागरूकता नहीं दिखाई जाए तो अर्थ का अनर्थ हो सकता है। इसलिए भाषा की शुद्धता की दृष्टि से इस प्रकार के शब्दों की विशेष जानकारी आवश्यक है। शब्द का अर्थ मूलतः उसके प्रयोग में निहित रहता है, अतः परीक्षा में भी शब्द के अर्थ को वाक्य में प्रयोग भगों करके स्पष्ट करना चाहिए।

शब्द	अर्थ
कांति	चमक
क्रांति	शीघ्र परिवर्तन
क्लांति	थकावट
केसर	सिंह की गर्दन के बाल
केशर	एक सुगंधित पदार्थ
कुलाल	कुम्हार
कलाल	शराब विक्रेता
काष्ठ	लकड़ी
काष्ठा	दिशा, सीमा

विलोम शब्द (Antonyms)

भाषा जीवन की अभिव्यक्ति है और जीवन द्वंद्वात्मक, अन्तर्विरोधात्मक है, इसलिए प्रत्येक भाषा में दो विपरीत अर्थों, मंतव्यों को व्यक्त करने के लिए अलग-अलग शब्दों का अस्तित्व रहता है। विपरीत भाव को व्यक्त करने के लिए ही विलोम (उल्टा) शब्दों की जानकारी आवश्यक है। हिंदी में ऐसे विलोम शब्द या तो मूल शब्द के रूप में पहले से ही विद्यमान हैं; जैसे दिन-रात, सुख-दुःख, छोटा-बड़ा आदि या फिर उपसर्ग लगाकर; जैसे-ज्ञानी-अज्ञानी, अर्थ-अनर्थ या उपसर्ग बदलकर; जैसे-सक्षम-अक्षम, अनुकूल-प्रतिकूल बनाए जाते हैं। कुछ महत्त्वपूर्ण विलोम शब्दों की सूची इस प्रकार है-

शब्द	अर्थ
उदार	अनुदार
उपसर्ग	परसर्ग
उत्कृष्ट	निकृष्ट
उपयुक्त	अनुपयुक्त
उपकार	अपकार
उत्थान	पतन
उत्तम	अधम
उत्कर्ष	अपकर्ष
उऋण	ऋणी
उपचय	अपचय (हानि)
उन्मीलन	निमीलन
उत्साह	निरुत्साह
उन्नति	अवनति
उन्नत	अवनत

प्रशासनिक शब्दावली

राजकीय प्रशासन एवं अन्यत्र भी हिंदी एवं अंग्रेजी दोनों भाषाओं का चलन है इसलिए अंग्रेज़ी एवं हिंदी दोनों भाषाओं की आधारभूत पारिभाषिक शब्दावली से परिचित होना आवश्यक है। यहाँ भारत सरकार के वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली आयोग द्वारा प्रकाशित विविध शब्दावलियों से मुख्य मुख्य शब्दावली दी जा रही है। यह शब्दावली ही अधिकृत है, अतः शब्दों के इसी हिंदी अनुवाद को प्रयोग में लेना चाहिए।

Tabulation = सारणी बनाना

Tally = मिलाना

Tariff = दर सूची

Tenure = अवधि/पट्टा

Terminal = आवधिक

Testimonial = प्रशंसा-पत्र

Time barred = कालातीत/कालबाधित

Time limit कालावधि

Time table = समय सारणी

Toll Tax = पथकर

Transaction = संचालन/लेन-देन

Transit = संक्रमण

Tribunal = अधिकरण

Trust = न्यास/विश्वास

Ultravires = शक्ति बाह्य

Unanimity = सर्व सम्मति/मतैक्य

Unavoidable = अपरिहार्य

Under Certificate of Posting = डाक

प्रमाणित

Underlying = के नीचे/अन्तर्निहित

Undisbursed = अवितरित

Undue = अनुचित

Unforseen = अदृष्ट

Unilateral = एकपक्षीय

Unstarred = अतारांकित

Unpaid = अदत्त

Upgrading = उन्नयन

Uphold = पुष्ट करना/मर्यादा बनाए रखना कीर

Utilisation certificate = उपयोग प्रमाण-पत्र

Vague = अस्पष्ट/अनिश्चित

Valid = विधिमान्य

Vigilance = सर्तकता

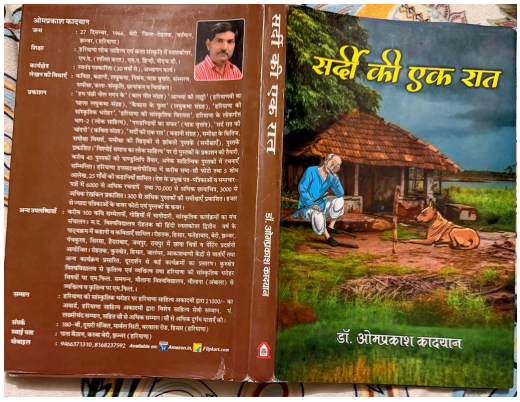
ग़ज़ल “ दृश्यों के उस पार”

अब क्या होगा, राज,
जो होना था, हो गया।
चाँद दिन में निकलता है,
सूरज रात को उगता है।
तन्हाई रात की कहती है,
दिन में उनसे मिलना है।
गुलाब कहे लबों से ही,
मेरा दिल अखरता है।
दृश्य ऐसे लगते हैं मुझे,
जैसे वो आगे चलता है।
नाम जिसका दिखना हो,
आँखों से ओझल होता है।
भूल-भूले से अपनों को,
याद वो करता रहता है।
आँखें नम रहती हैं हरदम,
खुशियों से वो भी डरता है।
साया जिससे उठे, वो समझे,
दिल कैसे-कैसे फिर रोता है।
लाज ही उसका गहना है,
उसी में घिरकर रहना है।
दृश्यम ही हो किसकी दृश्यता,
राज उसी का कुछ कहता है।



डॉ राजेंद्र प्रसाद राज़ (डॉ.आर पी राज़)

पुस्तक समीक्षा



लेखक: डॉ. ओमप्रकाश कादयान
पुस्तक: “सर्दी की एक रात"
मूल्य: ₹250.00
पृष्ठ: 128
संस्करण : 2024
साहित्यागारधामाणी मार्केट की गली, चौड़ा रास्ता,जयपुर-302003

डॉ. ओमप्रकाश कादयान साहित्य, पत्रकारिता, छायांकन और चित्रकला के क्षेत्र में सक्रिय रचनाकार हैं। उनकी रचनात्मक दृष्टि का प्रमुख आधार समाज और उसके आसपास घटित होने वाली घटनाएँ हैं। उनका कहानी-संग्रह ‘सर्दी की एक रात’ ग्रामीण जीवन, सामाजिक यथार्थ और मानवीय संवेदनाओं का जीवंत दस्तावेज है। संग्रह की ग्यारह कहानियाँ—‘एहसास’, ‘बसन्त आने की उम्मीद’, ‘गाँव की ओर’, ‘खाली हाथ’, ‘लम्बो ताई’, ‘मानवता’, ‘पुनर्जन्म’, ‘पुनर्विवाह’, ‘सर्दी की एक रात’, ‘तबस्सुम’ और ‘उसकी मुस्कान’—विविध जीवन-स्थितियों और मानवीय अनुभवों को अपने भीतर समेटे हुए हैं।

इस संग्रह की सबसे बड़ी विशेषता इसकी यथार्थपरकता है। लेखक ने जिन घटनाओं और पात्रों को कथा का आधार बनाया है, वे किसी काल्पनिक दुनिया के पात्र प्रतीत नहीं होते, बल्कि हमारे आसपास के जीवन से जुड़े हुए लगते हैं। गाँव की गलियाँ, मोहल्ले, खेत-खलिहान, गरीब किसान, संघर्षरत मजदूर, बुजुर्ग, महिलाएँ, बच्चे और सामान्य जन—सभी कहानियों में अपनी स्वाभाविक उपस्थिति दर्ज कराते हैं। इसीलिए पाठक को इन कहानियों में अपने जीवन और समाज की झलक दिखाई देती है।

कहानीकार की दृष्टि केवल घटनाओं के चित्रण तक सीमित नहीं है। वे सामाजिक विसंगतियों, स्वार्थ, छल-कपट, धार्मिक कट्टरता और अंधविश्वास जैसी प्रवृत्तियों पर प्रश्न उठाते हैं। इसके साथ ही वे मानवता, प्रेम, त्याग, करुणा, नारी-संघर्ष, देशभक्ति, प्रकृति-प्रेम और सामाजिक सद्भाव जैसे सकारात्मक मूल्यों को भी रेखांकित करते हैं। ‘मानवता’, ‘पुनर्विवाह’ और ‘तबस्सुम’ जैसी कहानियों के शीर्षक ही संकेत देते हैं कि लेखक का सरोकार मनुष्य को उसकी संवेदनशीलता और मानवीय गरिमा के साथ देखने से है।

संग्रह की एक उल्लेखनीय विशेषता ग्रामीण संस्कृति का आत्मीय चित्रण है। लेखक स्वयं ग्रामीण परिवेश से जुड़े होने के कारण गाँव के जीवन को केवल बाहर से देखने वाले पर्यवेक्षक नहीं हैं, बल्कि उसके अनुभवों के सहभागी हैं। गाँव के बुजुर्गों द्वारा रात में कहानी सुनाने की परंपरा का स्मरण संग्रह की भूमिका को अत्यंत आत्मीय बना देता है। इससे स्पष्ट होता है कि कहानीकार के भीतर कहानी के संस्कार बचपन से ही विकसित हुए।

भाषा की दृष्टि से कहानियाँ सरल, सहज, संवादधर्मी और जनजीवन के निकट हैं। कथाकार ने अनावश्यक भाषिक आडंबर से बचते हुए ऐसी भाषा का प्रयोग किया है जो सामान्य पाठक तक सहजता से पहुँचती है। घटनाओं और पात्रों के माध्यम से संदेश देने के कारण कहानियाँ उपदेशात्मक होने के बजाय स्वाभाविक प्रभाव उत्पन्न करती हैं।

‘सर्दी की एक रात’ केवल मनोरंजन के लिए लिखी गई कहानियों का संग्रह नहीं है, बल्कि यह समाज के सुख-दुःख, संघर्ष और संवेदनाओं का आईना है। डॉ. ओमप्रकाश कादयान ने अपने अनुभवों और सामाजिक सरोकारों को कथा का रूप देकर पाठक को सोचने, महसूस करने और बेहतर मनुष्य बनने की प्रेरणा दी है। यह संग्रह ग्रामीण जीवन की आत्मीयता और मानवीय मूल्यों की गरिमा को प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत करता है। निसंदेह ये कहानियाँ विद्यार्थियों , शोधकर्ताओं के लिए लाभकारी हैं । विद्यालय महाविद्यालय ,विश्वविद्यालय स्तर तक पाठ्यक्रम में शामिल होनी चाहिए।

समीक्षक
डॉ राजपाल
हिंदी-विभाग